Shri Madhavaprapanna Ashtakam

श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्

Document Information

Text title : Shri Madhavaprapanna Ashtakam

File name : mAdhavaprapannAShTakam.itx

Category : vishhnu, nimbArkAchArya, krishna, aShTaka

Location : doc_vishhnu

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 28, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Madhavaprapanna Ashtakam

श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्

श्रीसर्वेश्वरो जयति
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकं
श्रीमत्सर्वेश्वरं नौमि श्रीराधामाधवं प्रभुम् ।
यदनुकम्पया सर्वमसाध्यं सुलभं भवेत् ॥ १॥

परात्परं प्रभुं हंसं महर्षिसनकादिकान् ।
देवर्षिनारदं वन्दे श्रीनिम्बार्कं जगद्गुरुम् ॥ २॥

श्रीहरिव्यासदेवेशं परमाचार्यमिष्टदम् ।
परशुरामदेवञ्चाचार्यं नौमि जगद्गुरुम् ॥ ३॥

अस्मद्गुरुपदाम्भोजं प्रणम्य तन्यते हृदा ।
श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकसीशरतिसम्प्रदम् ॥ ४॥

राधामुकुन्द ! यमुनातटकुञ्जरम्य !
वृन्दावनेश ! रसिकेश ! हरे ! वरेण्य ! ।
सर्वेश्वर ! व्रजवने विहरन्निकुञ्जे
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ १॥

व्रजधाम के पावनतम सुरमरणीय वनोपवनों कुञ्ज-निकुञ्जों में दिव्य विहार करते हुए, श्रीयमुनातट पर अवस्थित अतिसुन्दर कुञ्ज में सुशोभितं परमवरेण्य रसिकेश वृन्दावनेश्वर सर्वेश्वर हे विभो! श्रीहरे ! राधामुकुन्द ! माधव ! मुझ शरणागत का सर्वविधरूप से इस भवव्याधि से परित्राण करें ॥ १॥

वृन्दावने व्रजवने रमणीयकुञ्जे
श्रीराधया सह सदैव सुशोभमान ! ।
सौरीप्रतीररसकेलिविलासलीन
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ २॥

श्रीब्रजमण्डलस्थ सुरम्य वन में अतिकमनीय परमदिव्य
श्रीमद्-वृन्दावनधाम की अत्यन्त रमणीय कुञ्ज में अपनी परमाह्लादिनी वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा के दक्षिणाङ्ग में सर्वदा सुशोभित और श्रीयमुना के सुरम्य पुलिन पर नित्य ललित दिव्य केलिरसविलास में अभिरत हे सर्वव्यापक ! सर्वेश्वर !माधव प्रभो ! मुझ शरणागत की सर्वतोभावेन रक्षा करें ॥ २॥

गोपाङ्गनानवगृहान्नवनीतचौर
गो-गोपवृन्दपरिशोभित ! पूर्णब्रह्मन् ! ।
सौन्दर्यधाम ! सनकादिमषिसेव्य !
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ ३॥

ब्रजगोपीजनों के मङ्गलमय नवगृह से सुन्दर नवनीत अर्थात् सदलोनी माखन का मधुर-हरण (चोरी) करने वाले, कोटि कोटि गोवृन्द ब्रजगोपगणों के मध्य अतिशय शोभायमान तथा श्रीसनकादि महर्षियों से सदा परिसेवित, निरतिशय सौन्दर्य-सौकुमार्य-माधुर्य-लावण्य-कारुण्य-मार्दवादिनिखिलगुणगणधाम परात्पर पूर्णब्रह्म हे सर्वान्तर्यामिन् ! श्रीमाधव ! मुझ तवपदप्रपन्न का सर्वरीत्या परिरक्षण करें ॥ ३॥

ब्रह्मादिदेवसुनिवन्दितपादपद्म
देवर्षिनारदविपञ्चिसुनादगीत ! ।
आनन्ददिव्यरससिन्धुसुधाभिषिक्त !
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ ४॥

ब्रह्मा-शिव-इन्द्रादि देववृन्दों एवं ऋषि-मुनीश्वरों से अभिवन्दित जिनके श्रीचरणकमल हैं । देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा उनकी अपनी दिव्य वीणा के अतिकमनीय मधुर निनाद से जिन श्रीहरि का प्रतिपल गान होता है । दिव्यानन्दसमुद्र के रसमय अमृत से जिनके मङ्गलमय श्री का जो अनुपम सौन्दर्यस्वरूप है ऐसे परम विभो! हे माधव ! मेरी पूर्णरूप से इस भवाटवी के दुःख द्वन्द्व से सुरक्षा करें ॥ ४॥

वेदादिशास्त्रप्रतिपादितदिव्यरूप
संसारबीज ! सुरवृन्दसुगीयमान ! ।
गोविन्द ! केशव ! सुरेश-सदाप्रपूज्य !
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ ५॥

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि यावन्निखिल-शास्त्र समूह द्वारा जिन श्रीहरि का असमोर्ध्व स्वरूप प्रतिपादित हुआ है । जो यावच्चराचर समग्र सृष्टि के उत्पत्ति-स्थिति-लय के एकमात्र बीजरूप अर्थात् हेतु हैं । निखिल देवगणों द्वारा जिनके दिव्य स्वरूप एवं अनन्त गुणराशि का सोल्लास

गान किया जाता हैं । इन्द्रादि सुरवृन्दों से सर्वदा प्रपूजित हे गोविन्द ! केशव ! सर्वान्तर्यामिन् ! श्रीमाधव ! मुझ अकिञ्चन शरणागत की समग्र रूप से अभिरक्षा करें ॥ ५॥

अध्यात्मचिन्तनरतैः श्रुतिशास्त्रविज्ञैः
सद्भिः सुधी-ऋषिवरैः समुपासनीय ! ।
श्रानन्दकोष ! रसधाम ! व्रजेश ! कृष्ण !
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ ६॥

अध्यात्मचिन्तन में अभिरत वेद-वेदान्तादि शास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता ऐसे उत्तमश्लोक सन्त-महात्माओं एवं विद्वज्जनों ऋषि-मुनियों द्वारा सम्यक् प्रकार से सर्वदा उपासनीय, परमानन्द के एकमात्र मूल अधिष्ठान ऐसे व्रजेश कृष्ण ! सर्वद्रष्टा हे माधव ! सम्पूर्णतया आपके शरण आये मुझ प्रपन्न की भवविपत्ति से परिवारण करने की निर्हेतुकी अनुकम्पा करें ॥ ६॥

श्रीधाम-कुञ्जललितादिसखीप्रसेव्य !
राधापदान्जमकरन्दमिलिन्दरूप !
वृन्दावनाऽखिललतातरुकुञ्जहृद्य
मां पाहि माधव ! विभो !नितरां प्रपन्नम् ॥ ७॥

श्रीवृन्दावनधाम की ललित कलित कुञ्जों में श्रीरङ्गदेवी-
ललिता-विशाखा-चित्रा-तुङ्गविद्या-इन्दुलेखा-हितु-हरिप्रियादि नित्य दिव्य सखीवृन्दों से सतत संसेवित एवं श्रीवृन्दावनस्थ समस्त लतावल्लरियों तवरों की मञ्जुल कुञ्जों में परमशोभायमान हे घट-घट-वासी सर्वव्यापक सर्वेश्वर माधव प्रभो ! मुझ शरणापन्न की भवभीति से रक्षा करें ॥ ७॥

गोपाल ! कृष्ण ! नलिनप्रियमञ्जुमाल्य-
शोभायमान ! सततं विपिने सुरम्ये ।
सर्वार्थसिद्धिवरद ! व्रजनन्दसूनो !
मां पाहि माधव! विभो ! नितरां प्रपन्नम् ॥ ८॥

अति रमरणीय सच्चिन्मय नित्य दिव्य श्रीवृन्दावन में कमल सुमनों की प्रतिप्रिय मञ्जुल माला से जो अतीव शोभित हो रहे हैं । प्रपन्नभक्तों के अभीष्ट मनोरथों एवं समग्र सिद्धियों से उन्हें परिपूर्ण करने वाले हे व्रजेन्द्रनन्दन ! गोपाल ! कृष्ण ! सर्वज्ञ ! सर्वेश्वर ! माधव प्रभो ! तवपदपङ्कज शरणपरायण अकिञ्चन की सर्वात्मना संरक्षण करने के लिये निर्हैतुक स्वाभाविक
अनुग्रह करें ॥ ८॥

श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकमीशरतिसम्प्रदं ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥ ९॥

श्रीराधामाधव प्रभु की पराभक्ति प्रदान करने वाला यह“श्रीमाधवप्रपन्नाष्टक” मुझ राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य द्वारा उन्हीं सर्वान्तर्यामी की अन्तःप्रेरणा से इसका प्रणयन हुआ जो सर्वोपादेय नित्य पठनीय स्तव होगा ॥ ९॥

इति श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor

Shri Madhavaprapanna Ashtakam

pdf was typeset on January 28, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*